गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

आजादी के ७५वें अमृत महोत्सव

एवं

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती

के सुअवसर पर

भारत की ज्ञान, सांस्कृतिक परम्पराएँ एवं प्रथाएँ

विषय पर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

का आयोजन

29-31 मार्च, 2023

वेबसाईट: www.gkv.ac.in

M. 9309 455 455 (Toll-Free), 7300761138

Email: iksconference@gkv.ac.in

Link for Registration

https://forms.gle/ptM3cesjn6TBqt3h8

विश्वविद्यालय के बारे में

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के विरोध रूप में भारतीय गुरुकुल पद्धति को पुनर्जीवित करने के लिए तथा वैदिक ज्ञानपरम्परा के संरक्षण और रूपान्तरण के लिए अभिनव भारत के निर्माण के पुनीत उद्देश्य के साथ की गयी थी। 121 वर्ष पूर्व स्थापित यह देश का प्रथम नॉन-ब्रिटिश विश्वविद्यालय था, जिसे प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालयों (कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे) और लाहौर में पञ्जाब विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद स्थापित किया गया था। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय ज्ञानपरम्परा पर आधृत गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए की गई थी। गुरु-शिष्य परम्परा पर आधृत गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति प्राचीन और अर्वाचीन विद्याओं के समेकित और समावेशी प्रयोग के कारण अभिनव दृष्टि से सम्पन्न थी। यह देश का प्रथम विश्वविद्यालय था, जिसे शासकीय प्रश्रय की उपेक्षा कर जनता द्वारा दिए गए दान के द्वारा स्थापित किया गया था। वैदिक शिक्षा दर्शन पर आधृत यह विश्वविद्यालय पारम्परिक और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण और शोध का बड़ा केन्द्र रहा है। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना महर्षि दयानन्द के शिष्य महान् संन्यासी और हिन्दू समाज सुधारक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 04 मार्च, 1902 में की थी। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय योगदान को रेखांकित करते हुए भारत सरकार ने इसे 1962 में डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया था। यह भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलौर और भारतीय कृषि संस्थान पूसा, दिल्ली के बाद यह दर्जा प्राप्त करने वाला देश का तृतीय संस्थान था।

संगोष्ठी की अवधारणा

भारत में सांस्कृतिक, बौद्धिक और तकनीकी ज्ञान की एक गौरवशाली और समृद्ध परम्परा रही है। भारतीय ज्ञानपरम्परा की मूल प्रकृति समग्र और समावेशी है, इस पद्धति में ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाएँ समाहित हैं। इसी परम्परा में प्राचीन भारत में दर्शन, गणित, खगोल-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, चिकित्सा, व्याकरण और साहित्य के क्षेत्र में व्यापक विकास हुआ है। दुर्भाग्यवश विभिन्न शैक्षणिक विषयों के विकास में प्राचीन भारत के योगदान को भारतीय शिक्षा जगत् में वाञ्छित सम्मानित स्थान नहीं प्राप्त हो सका है। जिसके फलस्वरूप हमारी स्वदेशी ज्ञानपरम्परा से पोषित ज्ञान से आधुनिक पीढ़ी वञ्चित रही हैं। शैक्षणिक जगत् में हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञानपरम्पराओं के योगदान की उपेक्षा कर पश्चिम के शिक्षा दर्शन पर केन्द्रित शिक्षा को प्रोत्साहन मिला है। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही भारतीय ज्ञानपरम्परा पर आधारित शिक्षा और अनुसन्धान की पद्धतियों के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ने वैदिक साहित्य की अन्तर्दृष्टि के माध्यम से विभिन्न आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विषयों से सम्बन्धित प्राचीन वैदिक ज्ञान की खोज का अभिनव कार्य किया है। इस ज्ञान के आकादमिक जगत् में व्यापक प्रसार के लिए विश्वविद्यालय ने संगोष्ठी विमर्श और शोध प्रकाशन यथा- **वैदिक वाग् ज्योति**, **गुरुकुल पत्रिका**, **वैदिक पथ** आदि शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन किया तथा विज्ञान विषयों के अनुवाद से लेकर विभिन्न भाष्य और ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं।

संगोष्ठी विषय

2023 एक ऐतिहासिक वर्ष है, क्योंकि यह महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती वर्ष है। महर्षि दयानन्द का जयन्तीवर्ष भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणाप्रद वर्ष है। स्वामी दयानन्द जी के उद्घोष **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात् हमें सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिए उद्यमशील होना चाहिए, क्योंकि कृतसंकल्प होने हेतु यह सर्वथा उपयुक्त समय है। आज विश्व को मानवतावादी और नैतिक रूप से दृढ़ता से सम्पन्न दृष्टि की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का कथन है कि "जब दुनिया २१वीं सदी में विविध प्रकार के विवादों, हिंसा और अस्थिरता से घिरी हुई है तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाया गया मार्ग भारत और दुनिया के लोगों में आशा जगाता है" हमारे अन्दर महर्षि दयानन्द की वैदिक परम्परा के प्रति गौरव और ऊर्जा का संचार करता है। वर्तमान में यह नितान्त ही आवश्यक हो जाता है कि हम अपने प्राचीन ज्ञान और संस्कार से जुड़े मूल्य विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से छात्रों को हस्तान्तरित करें। भारतीय ज्ञानपरम्परा और वैदिक शिक्षा दर्शन विशिष्ट

कौशल विकास की अपेक्षा युवा छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास, ज्ञान और चरित्र-निर्माण की ओर अग्रसर करता है। इस दृष्टि से सम्पन्न, ज्ञानसम्पन्न परम्परा को भारतीय शिक्षा जगत् में एक नवाचारी हस्तक्षेप की तरह उपस्थित होने की प्रक्रिया, प्रविधि, चुनौतियाँ और आवश्यक प्रशिक्षण के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक, विद्वान्, शोधार्थी और बुद्धिजीवी एक मञ्च पर आकर उन विधियों पर एक सकरात्मक विचार-विमर्श करें।

महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाने की भारत सरकार के सराहनीय प्रयास के बाद गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्याल) इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। जिसमें विभिन्न शैक्षणिक विषयों के विद्वान्, आचार्य और बुद्धिजीवी भारत के पारम्परिक ज्ञान को पुनर्जीवित करने के साधनों और अनुप्रयोगों पर चर्चा करेंगे तथा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रथाओं के उन्नयन के लिए गहन मन्थन करेंगे।

संगोष्ठी में प्रासंगिक क्षेत्रों से जुड़े विद्वानों, आचार्यों और शोध अध्येताओं के शोध-पत्रों की प्रस्तुति के साथ कई मुख्य विषयों पर विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान और शोध-पत्र वाचन के तकनीकी सत्र सम्मलित होंगे। यह संगोष्ठी शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों को भारतीय ज्ञानपरम्परा और वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने और अपने शोध के परिणामों पर चर्चा करने के लिए एक मञ्च प्रदान करेगी। इस संगोष्ठी का उद्देश्य युवाओं को हमारी प्राचीन ज्ञानपरम्पराओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और मूल्यों को वैदिक ज्ञान से अवगत कराना है। एतद् अतिरिक्त संगोष्ठी मे उप विषयों के द्वारा व्यापक विचार-विमर्श के माध्यम से हमारी स्वदेशी ज्ञान पद्धतियों को समग्रता से समझने का अवसर प्राप्त होगा।

यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान प्रणाली और साहित्य के बीच सम्बन्धों पर केन्द्रित रहेगी। इसके अतिरिक्त यौगिक विज्ञान और समग्र स्वास्थ्य, आधुनिक शिक्षा प्रणाली और विज्ञान, इञ्जीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और सतत विकास, मनोविज्ञान और दर्शन विषयों पर बृहद् चर्चा और विचार-विमर्श होगा। संगोष्ठी में भारतीय ज्ञानपरम्पराओं के महत्त्व पर भी जोर दिया जाएगा जो कि आधुनिक समय में सम्पूर्ण मानवता और पर्यावरण के लिए अपरिहार्य हैं। भारतीय ज्ञानपरम्पराओं पर चर्चा भविष्य के विचार-विमर्श और अनुसन्धान के लिए एक नूतन कार्यदृष्टि भी प्रदान करेगी। संगोष्ठी का विषय और उप विषय व्यावहारिक रूप से वैदिक अध्ययन, दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, आयुर्वेद, संस्कृति, योग, साहित्य आदि जैसे सभी आकादमिक विषयों पर आधारित हैं।

भारत एक सांस्कृतिक वैविध्य वाला देश है। भारत की अपनी विशिष्ट सभ्यता है, जिसकी अपनी परम्पराएँ, संस्कृति और मूल्य हैं, जो भाषाओं, धर्मों के त्यौहारों, संगीत, नृत्य, शिक्षा आदि में परिलक्षित होते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारी प्राचीन परम्पराएँ और मूल्य हमारे वैज्ञानिक अनुसन्धान में भी परिलक्षित होते हैं। इसलिए संगोष्ठी में भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक पहलुओं पर विशेष सत्र आयोजित किए जायेंगे।

उपविषय

प्राचीन वैदिक भारत ने वैज्ञानिक लेखन के माध्यम से उत्कृष्ट ज्ञान की स्थापना की है। अध्यात्म विज्ञान, खगोल विज्ञान, आयुर्विज्ञान, त्रिकोणमिति, ज्योतिष आदि जैसे आकादमिक क्षेत्रों में अनुपम योगदान दिया है। वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, वेदांग, ब्रह्मसूत्र आदि में गहन और अतुलनीय ज्ञान है। उपर्युक्त विषयों में निहित ग्रन्थों के गूढ़ अर्थों को समझने, उन्हें गहराई से पढ़ने और ध्यान से समझने की आवश्यकता है।

पिछले एक दशक में भारतीय ज्ञानपरम्परा की भारी माँग रही है तथा विश्व तेजी से विकास के पश्चिमी मॉडल की खामियों और सीमाओं को महसूस कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षानीति (एनईपी) २०२० भी भारतीय ज्ञानपरम्परा पर केन्द्रित है और इसे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में सम्मिलित किया गया है। २१वीं सदी की विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारतीय ज्ञानपरम्परा पर आधृत शिक्षण और अनुसन्धान को बढ़ावा देने पर नए सिरे से ध्यान केन्द्रित किया गया है यह एक उल्लेखनीय कदम है । इसलिए, युवा विद्वानों को भारतीय ज्ञानपरम्परा के क्षेत्र में अनुसन्धान करने के लिए प्रोत्साहित करने और मार्गदर्शन करने के लिए सम्मेलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० पर केन्द्रित एक पृथक् तकनीकी सत्र होगा। सम्पूर्ण संगोष्ठी निम्नलिखित उपविषयों पर केन्द्रित रहेगी-

उपविषय-1

- आध्यात्मिक विज्ञान
- वैदिक यज्ञ (वैदिक अग्निहोत्र) के वैज्ञानिक आयाम
- योग विज्ञान
- भारतीय संगीत (गन्धर्व वेद) एवं इसके वैज्ञानिक आयाम
- भारतीय नृत्य (गन्धर्व वेद) एवं इसके वैज्ञानिक आयाम
- भारतीय संगीत वाद्य यन्त्रों के वैज्ञानिक आयाम
- भारतीय रंगमञ्च एवं नाट्य
- वैदिक मनोविज्ञान तथा आधुनिक मनोविज्ञान
- भारतीय भाषाएँ (संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, ओडिया, मराठी, पंजाबी, तमिल आदि) और इनके अन्तर्सम्बन्ध
- भारतीय साहित्य में प्रतिबिम्बित संस्कृति
- भारतीय परम्पराओं और उत्सवों का वैज्ञानिक महत्त्व
- भारतीय संस्कृति का सार्वभौम महत्त्व
- भारतीय दार्शनिक परम्परा
- प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत

उपविषय-2

- वैदिक सामाजिक विज्ञान
- वैदिक राजनीति विज्ञान
- प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
- वैदिक विज्ञान का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
- वैदिक शिक्षा पद्धति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020)
- भारतीय खेल और उत्तम स्वास्थ्य
- वेदों में नारी शिक्षा

उपविषय-3

- वैदिक भौतिकी विज्ञान
- वैदिक रसायन विज्ञान
- वैदिक गणित विज्ञान
- वैदिक सूक्ष्मजीवविज्ञान
- वैदिक धातु विज्ञान
- वैदिक चिकित्सा विज्ञान
- वैदिक कृषि विज्ञान
- वैदिक प्रबन्धन
- वैदिक आयुर्वेद
- वैदिक खगोल विज्ञान
- वैदिक पर्यावरण विज्ञान
- प्राचीन जल विज्ञान
- वैदिक सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान
- वैदिक स्थापत्य विज्ञान
- वैदिक विज्ञान तथा संस्थिरता
- वैदिक आभियान्त्रिकी एवं तकनीकि

उपविषय-4

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञानपरम्परा

- शिक्षा की भारतीय अवधारणा और भारतीय ज्ञानपरम्परा
- वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में भारतीय ज्ञानपरम्परा की प्रासंगिकता
- समकालीन विश्व में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की आवश्यकता

विशिष्ट वक्तागण

विख्यात शिक्षाविद्, नीति निर्माता, शोध अध्येता, अधिकारी राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करेंगे।

समय सीमा

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मौलिक शोधपत्र/सैद्धान्तिक शोधपत्र और केस स्टडीज़ विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और छात्रों से आमन्त्रित किए जाते हैं।

संगोष्ठी में प्रतिभाग के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करें- https://forms.gle/ptM3cesjn6TBqt3h8

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

शोधपत्र सारांश जमा करने की अन्तिम तिथि - **27 मार्च, 2023**

शोधपत्र सारांश विषयक सूचना-संचार की अन्तिम तिथि - **28 मार्च, 2023**

शोधपत्र जमा करने करने की तिथि - **31 मार्च, 2023 (संगोष्ठी के समय)**

शोधपत्र विषयक सूचना-संचार की अन्तिम तिथि - **15 अप्रैल, 2023**

शोधपत्र सारांश ऑनलाइन माध्यम से Docx/PDF फ़ाइल फॉर्मेट में जमा किया जाएगा।

प्रतिभागिता शुल्क

संगोष्ठी प्रतिभागिता शुल्क का विवरण नीचे दिया गया है। प्रतिभागिता शुल्क के अन्तर्गत संगोष्ठी किट, लेखनी और पैड, संगोष्ठी विवरणिका, त्रिदिवसीय कार्यक्रम और सूक्ष्म जलपान/भोजन सम्मलित होगा। संगोष्ठी आयोजन समिति अतिथि गृहों/ होटल/धर्मशाला आदि में रुकने के लिए छूट की दरों पर आवास व्यवस्था हेतु संवादरत हैं। जिसके बारे में विस्तृत सूचना शीघ्र ही प्रसारित की जाएगी।

छात्र	₹ 300
शोध अध्येता	₹ 500
प्राध्यापक	₹ 700
कॉरपोरेट/उद्योग प्रतिनिधि	₹ 1000
विदेशी प्रतिभागी	$ 100

पञ्जीकरण शुल्क इलेक्ट्रॉनिक धनराशि अन्तरण (ऑनलाइन मनी ट्रांसफर) के माध्यम से जमा किया जाएगा। ऑनलाइन पञ्जीकरण शुल्क जमा करने के उपरान्त उसका स्नेपशॉट और UTR नम्बर iksconference@gkv.ac.in पर भेजना सुनिश्चित करें। ई मेल के विषय अनुभाग में- "**Payment Registration Fees & Name of the participant**" लिखकर भेजें।

संगोष्ठी प्रकाशन

चयनित और समीक्षित शोधपत्र आईएसबीएन नम्बर युक्त सम्पादित ग्रन्थ में प्रकाशित किए जायेंगे। मौलिक शोधपत्र प्रकाशन हेतु जमा किए जा सकते हैं, उल्लेखनीय है कि शोधपत्र की शब्द सीमा 5000 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए। शोधपत्र प्रकाशन और जमा करने की नियमावली की विस्तृत सूचना संगोष्ठी के समय अधिसूचित की जाएगी।

संगोष्ठी स्थल

मुख्य परिसर, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

संगोष्ठी सम्बन्धी किसी भी प्रकार की जानकारी और सहायता के लिए नि:संकोच सम्पर्क करें-

गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

वेबसाइट: www.gkv.ac.in

मोबाईल 9309455455 (टोल फ्री), 7300761138

ईमेल- iksconference@gkv.ac.in

पञ्जीकरण हेतु लिंक

https://forms.gle/ptM3cesjn6TBqt3h8

राष्ट्रीय सलाहकार समिति

1. प्रो0 कपिल कुमार, पद्मभूषण, जे0एन0यू0, नई दिल्ली
2. प्रो0 बी0आर0 शर्मा, कुलपति, श्री श्री रविशंकर विश्वविद्यालय, उड़ीसा
3. प्रो0 एस0वी0एस0 राणा, पूर्व कुलपति, बी0यू0 झांसी
4. प्रो0 के0पी0 सिंह, कुलपति, एम0जे0पी0 रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
5. प्रो0 एच0एस0 सिंह, कुलपति, माँ शाकुम्भरी स्टेट विश्वविद्यालय, सहारनपुर
6. प्रो0 महावीर अग्रवाल, पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
7. प्रो0 श्रीनिवास बरखेड़ी, कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
8. प्रो0 योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय
9. प्रो0 पूर्णिमा नौटियाल, कुलपति, हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर
10. प्रो0 सुरेखा डंगवाल, कुलपति, दून विश्वविद्यालय, देहरादून
11. प्रो0 ओ0पी0एस0 नेगी, कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
12. प्रो0 सुनील कुमार जोशी, कुलपति, उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून
13. प्रो0 संगीता शुक्ला, कुलपति, चौ0च0सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

14. प्रो0 के0एन0 जोशी, कुलपति, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
15. प्रो0 दिनेश चन्द्र शास्त्री, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
16. प्रो0 आर0के0 शर्मा, कुलपति, जेपी यूनिवर्सिटी ऑफ इंफोरमेशन टेक्नोलॉजी, सोलन
17. प्रो0 वाचस्पति मिश्र, पूर्व अध्यक्ष, यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ
18. प्रो0 सुरेन्द्र कुमार, पूर्व कुलपति, गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार
19. प्रो0 रमेश भारद्वाज, कुलपति, वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल
20. प्रो0 शशि प्रभा कुमार, अध्यक्ष, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज सोसायटी, शिमला
21. प्रो0 आर0सी0 डिमरी, डायरेक्टर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जियोमैग्नेटिज्म, मुम्बई
22. प्रो0 सचिन माहेश्वरी, नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (एन0एस0यू0टी0), नई दिल्ली
23. प्रो0 नरेन्द्र शर्मा, कुलपति, मदरहुड यूनिवर्सिटी, रुड़की
24. प्रो0 कमलेश कुमार छ0 चौकसी, डायरेक्टर स्कूल ऑफ लैंग्वेज, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
25. प्रो0 प्रदीप के. रामचालरा, डायरेक्टर, CSIR, CBRI, Roorkee
26. प्रो0 रामनाथ झा, जे0एन0यू0, नई दिल्ली
27. प्रो0 आर0एम0 मेहरा, दिल्ली विश्वविद्यालय
28. प्रो0 नरेश पाधा, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
29. प्रो0 सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
30. प्रो0 ओमनाथ बिमली, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
31. प्रो0 पी0एन0 गज्जर, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

सम्पर्क सूत्र

1. प्रो0 श्रवण कुमार शर्मा, अंग्रेजी विभाग (9412074666)
2. प्रो0 ब्रह्मदेव, संस्कृत विभाग (9412307123)
3. प्रो0 नवनीत, वनस्पति एवं सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग (7300761327)
4. प्रो0 डी0एस0 मलिक, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (7300761220)
5. प्रो0 नमिता जोशी, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (9410559821)
6. प्रो0 देवेन्द्र कुमार गुप्ता, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व संग्रहालय (9897902653)
7. प्रो0 रेणु शुक्ला, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग (8266074170)
8. प्रो0 सुचित्रा मलिक, हिन्दी विभाग (9411731310)
9. प्रो0 एल0पी0 पुरोहित, भौतिकी विभाग (7300761217)
10. प्रो0 विवेक कुमार गुप्ता, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग (9837202304)
11. प्रो0 विनय विद्यालंकार, संस्कृत विभाग (7906725688)
12. प्रो0 सुरेन्द्र कुमार त्यागी, योग विज्ञान विभाग (9897173154)
13. डॉ0 एम0एम0 तिवारी, अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग (7300761332)
14. डॉ0 आर0के0 शुक्ला, रसायन विभाग (7300761332)
15. डॉ0 गगन माटा, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (9897161345)
16. डॉ0 हरेन्द्र कुमार, गणित विभाग (7983395737)